युवाभारत

गाणी चळवळीची गाणी समतेची

शशी सोनवणे

5/10/2010

गाणी चळवळीची - गाणी समतेची

युवा भारतची ही गाणी २००४च्या उन्हाळ्यात विरारलाच रचण्यात आली. चळवळीची गाणी ही विचारांच्या प्रचारासाठी, समाजाच्या प्रबोधनासाठी रचली जातात. परिवर्तनवादी, क्रांतीकारी चळवळी पुढे नेण्यामधे अशा गाण्यांची मोठी भूमिका राहीली आहे. चळवळ, संघर्ष जसे तीव्र, जोरदार होतात त्याप्रमाणे संघर्षाची भूमिका जनमानसात पसरवणा-या गाण्यांचे सृजन होते. एकविसावे शतक उजाडत असताना, एकंदरीतच चळवळीमधे साचलेपण आलेले होते. जग अजूनही समाजवादाच्या समतेच्या फसलेल्या प्रयोगांच्या धक्क्यापासून पूर्णपणे सावरलेले नव्हते. भारतातही सामाजिक विषमतेची सव्र मांडणी केवळ जातींच्या अस्मितेपूरतीच मर्यादीत संकुचित झालेली होती. जी काही चळवळीची गाणी थोड्याफार प्रमाणात गायीली जात होती ती कालबाह्य ठरत होती. शाहीर विलास घोगरे, संभाजी भगत, चेराबंडा रसाज़ू, गदर साखे अपवाद जरुर आहेत. परंतु एकंदरीतच चळवळीची गाणी प्रचारकी होऊन विशिष्ट धाटणीची झाली होती.

अशा परिस्थितीत नव्याने सर्वसामान्यांच्या भाषेत प्रचारकी नकरता गाणी बनवण्याचा हा प्रयत्न झाला. यातील यातील अनेक गाणी रोजच्या बोलण्या-चालण्यातून येणा-या शब्दांच्या आधाराने बनली आहेत. काही गाणी अधीच बनलेली होती पण त्या गाण्यांमधे काही नवीन कडवे जोडण्यात आली. उदाहरणार्थ “जब तक रोटी के प्रश्नों पर” या गाण्यातील शेवटची तीन कडवी नवीन जोडलेली आहेत. या सर्व गाण्यांच्या विषयाला तसेच आशयाला घेऊन रशीद, मिलींद युवा भारतची मुंबईतील सर्वच कार्यकर्ते सतत चर्चा करत सूचना मांडत. पण ही सर्व गाणी शब्दबद्ध करण्यामधे ज्यांची प्रमुख भूमिका राहीली, ज्याने अक्षरश: ऑर्डरप्रमाणे ही गाणी बनवली तो कलंदर म्हणजे शाहीर यशवंत वासनिक! शब्दांचा बादशाह असलेल्या यशवंतची कल्पनाशक्ती अफट आणि निरीक्षणंही तशीच मार्मिक. “भूमि समन्दर” सारखी गाणी त्याने एकटयाने लिहीली. एवढच नाही तर या सर्व गाण्यांना चाली बसवण्याचं कामही त्याचच. २००४च्या त्या उन्हाळ्यात अशा अनेक मैफिली रंगल्या अनेक ओळी लिहिल्या गेल्या, पुसल्या गेल्या, गाण्यांचे अनेक विषय ठरवले आणि अनेक विषय राहीलेही. तरी देखिल त्या महिन्या दोन महिन्यात एवढी गाणी चळवळीसाठी बनलीच. यापुढेही अशाच कोणत्यातरी उन्हाळ्यात अगदी हिवाळा पावसाळ्यातही रस्त्यावरील सर्वसामान्य माणसाच्या भाषेत गाणी येतीलच यात शंका नाही!

शशी सोनवणे
राष्ट्रीय संयोजक – युवा भारत

युवा भारत गीत

(युवा भारत संघटनेची भूमिका थोडक्यात मांडणारं हे गीत)

अपना क्या है, इस दुनिया में, सबकुछ लिया उधार
सारा लोंहा उन लोगों का, अपनी केवल धार, अपनी केवल धार

राहों पर निलाम हमारी भूख नहीं हो पाएगी
अपनी कोशिश हैं कि ऐसी सुबह यहां पर आएगी।

अभी यहां काला बाजारी जारी हैं बाजारों में
बचा हुआं भी बट जाता हैं मोटी दंडीमारो में
लेकिन कल हर चीज बराबर सब में बाँटी जाएगी। अपनी कोशिश......

भांडो के लतिफों से गुंजता राजसिंहासन भारत का
नेता नाचें ता-ता-थैय्या ताल देता अमरिका
आह गरीब की इस कलरव में अब ना दबाई जाएगी। अपनी कोशिश....

ज़ात भी ओछी करम भी ओछा, ओछा कसब हमारा
निचे से प्रभू ऊंच किए हैं कहे रईदास चम्हारा
मानवता तुकाराम कबीर की अब ना छिपाई जाएगी। आपनी कोशिश ....

कभी ना अपना एका तुटे बंटमारों की साज़िश में
कभी हमारे पांव ना भटके सिर्फ आपसी रंजीश में
कल बांहे फैलाकर मंजिल हमे गले लगाएगी।
अपनी कोशिश हैं कि ऐसी सुबह यहां पर आएगी,
राहों पर .....

बुढा गांव

आँखो में आंसू लिए रे
मेरा बुढा गांव आँखो में आंसू लिए रे ।

कुंभारों की भट्टी बूझ गई, लोहारों का लोहा गल गया,
लकडी छीन गई बढई से मेरे, ज़ुलाहें का करधा छीन गया
बरगद के नीछे रोए रे मेरा बुढा गांव …………आँखो में आंसू लिए रे

झरने सुख गए नाले पट गए पनिहारन की राह देखते कुंए के भी आंसू सुख गए,
बॉटल में पानी बंदी रे बिकने के लिए आँखो में आंसू लिए रे………..

पेड ताड के रस बरसाते सुखे महुए जब भीग जाते
थके हुए मेरे मजदूर भाई पीकर थोडी राहत पाते
ठंडी बियर व्हीस्की देखे रे मेरा बुढा गांव ……..

नदिया दरिया उसकी दाता गल काँटे से मछली फंसाता
चाँदी जैसी मछली बेचकर रुखा-सुखा भोजन पाता
जर्मन का ट्रालर देखें रे बेबस मछुआरा आँखो में आंसू लिए रे…

रेंदा आरी सूर सज़ाते बसुला-हाथोड़ा ताल बजाते
विश्वकर्मा की आंगन बाड़ी चर्चा बादल पानी किसानी
प्लास्टिकने सुना किया रें सुखी संसार आँखो में आंसू लिए रे ….

बांतो सी चलती थी कैंची, धडकन थम गई उसकी मशीन की
खादी की बनियान नहीं हैं, नहीं हैं चढ्ढी अब नाडे की
रेड़िमेड़ बाजार में आया रे, रस्ते पर दर्जी आँखो में आंसू लिए रे ….

माचीस की डिबिया में साड़ी, रेशम कोसा जरी किनारी
कारीगरी की शान पुरानी, सात समन्दर तक पहचानी
पावरलूमने खतम किया रें, हाथों का हुनर आँखो में आंसू लिए रे ….

हरिश्चन्द्र और तारामती की लोरीक-चंदा आला-उदल की
हिर-रांझे की प्रेम कहानी थके जीवन को मिले जवानी
चैनल ने बरबाद किये रे मेलों की राते आँखो में आंसू लिए रे ....

पिढ़ीयो का वो गांव हमारा, क्यों लगता हैं थकासा हारा
किसने उसमी रौनक छिनी, किसने उसके पेट में मारा
गद्दारों ने गिरवी रखी रे मेरे गांव की भूमी आँखो में आंसू लिए रे ....

गांव से उज़ड़ा शहर में आया, पेट की आग ने मजूर बनाया
कुटुम्ब-कबिला डेरा लेके चाँद के नीछे चुल्हा जलाया
बूलडोजर ने रौंद डाले रे जीवन के सपने आँखो में आंसू लिए रे ....

कुत्ते बिल्ली को मिलता खाना, जंगल के पशुओं को खाना
जिन ज़ातों ने जग को संवारा, नष्ट हो रहा हैं उनका घराना
पूंजीवाद से लढना होगा रे जिने के लिए आँखों में आशा लिए रे
ब्राह्मणवाद से लढना होगा रे जिने के लिए आँखों में आशा लिए रे
आॅखों में आशा लिए रे मेरा बुढा गांव आशा लिए रे
....

लोकल चली विरार की

गाड़ी चली रे गाड़ी गाड़ी चली ॥२॥
लोकल चली रे विरार की। गाड़ी चली रें ...

मोटा भाईं सेठ आया काला चाप्टर गायकवाड
कडक्या बेवडा अंदर आया जाड्या टकलू को पछाड़
घूसा भाजीवाला भैय्या लेकर खाली टोपली। गाड़ी चली रें.....

धक्कम धक्का चिल्लम चिल्ली मार सालें को जाने दें
बोंबा बोंबी टेन्शन मच-मच बोरीवली तो आने दें
झोल चलें ना भाईगिरी का शेर भी भिगी बिल्ली। गाड़ी चली रें....

दुबक के बैठा फिल्मीं हिरो आधी डिक्की रखने दें
रगड़ा पांव खाके निकला टिसी से तो बचने दें
टॉप हिरोईन सारी साली इसपर ही मचलती। गाड़ी चली रें....

टिंगू भट की लंबी चुटीया खान साब के मुंह में
गरदुले चरसी का पसीना ऑफिसर की रुंह में
ना अमीरी ना गरीबी ना कोई जाती पाती। गाड़ी चली रें....

बाबा बुवा संत करें ना इस देश का बेड़ा पार
लोकल के ड़िब्बे में देखों इन्सानों का सदाचार
औरत बच्चे और बुढ़ों को यहीं पर इज्जत मिलती। गाड़ी चली रें....

चलती गाड़ी बहता पानी जीवन की हैं ये रफ़्तार
जों थम गया जों थक गया मुंबा नगरी में बेकार
चलतें पड़ते गिरते उठते फ़िर भी ये संभलती
यें हैं मुम्बई की ज़िंदगानी गाड़ी चली।
गाड़ी चली रें....

रोटी

जब तक रोटी के प्रश्नों पर रखा रहेगा भारी पत्थर
कोई मत ख्वाब सजाना तुम,
मेंरी गली में खुशी खोजते अगर कभी जो आना तुम ॥२॥

धानों की बालियों में टपका हुआ पसीना
सोचो तो इसकी बूंदे मोती हैं या नगीना
रोतें रधिया और बिशेसर, जिनका लहूं गिरा धरती पर
मेहन्दी नहीं लगाना तुम ॥ मेंरी गली में खुशी....

अपने ही हाथ काट लें ऐसी भी क्या जवानी
मोहताज हो ना जाए आकाश जैसा दानी
जब तक आंसू नहीं मचलतें अंगारों में नहीं बदलते
काज़ल नहीं लगाना तुम ॥ मेंरी गली में खुशी....

चंदा के बदले हमकों रातें मिली हैं काली
हैं इस तरफ अंधेरा और उस तरफ दिवाली
जब तक सुरज नहीं उगालें चंदा को ना वापस पा लें
बिन्दीयां नहीं लगाना तुम ॥ मेंरी गली में खुशी....

इतिहास स्वयंभूओं का जगड़ा अभी हुआं हैं
जाती वर्ग और संप्रदाय इन्सान बंटा हुआं हैं
जब तक ना ये उलझन छुटे जाती बन्धन भी ना टुटे
पायल नहीं बजाना तुम ॥ मेंरी गली में खुशी....

अबला नहीं सबल हैं तू नारी नहीं बेचारी
दुनिया को तू बदल दें ऐसी करों तयारी
समता बन्धुत्व समाज में आए, पिड़ीत जनता जब मुस्काए
आँचल तभी लहराना तुम
मेंरी गली में मुझ से मिलने हंसी खुशी से आना तुम ॥२॥

भूमि समन्दर

भूमि समन्दर अनमोल ये उपहार
कुदरत का शाहाकार, नदी नाले और पेड़ पहाड़
इन्हे वो करते अंदर लाल मुंहवाले बंदर, बूश और टोनी ब्लेयर
दमादम मस्त कलन्दर, दमादम मस्त कलन्दर

दादी की ज़ुबानी सुनी थी कहानी
डाकू थे भयंकर करते रहजानी
पहले के डाकू धन लुटते थे, अब के ये डाकू कर्ज़े देते हैं
डाकू बने साहुकार, विश्व व्यापार चोर बाज़ार
लुटेरे बन गए रहबर लाल मुंहवाले बंदर, बूश और टोनी ब्लेयर
दमादम मस्त कलन्दर

खाड़ी की तबाही देती हैं गवाही
कारपेट बम से लाछे बिछाई
हथियार तो थे सिर्फ बहाना, असली मकसद तेल था पाना
मौत के सौदागर बूश ब्लेयर नये हिटलर
खुन का लेते डिनर लाल मुंहवाले बंदर
बूश और टोनी ब्लेयर दमादम मस्त कलंदर...

मेहनत तुम्हारी खेत तुम्हारे
हल भी तुम्हारे बैल तुम्हारे
बीज हैं उनके पेटेन्ट सारे, क्या काटेगा हाथ पसारे
अपनी पैदावार किस बाज़ार बेचेगा यार
के तेरा माल हैं भंगर, सड़े गोदाम के अंदर
ये कहते बूश और टोनी ब्लेयर दमादम मस्त कलन्दर...

गोटियां बिछाने में अव्वल युरोपियन
भुखे नंगे हैं मुल्क एशियन
ख्वाब दिखाते डेवलपिंग के, फिल्ड़ींग जमाते मार्केटींगके
एक तीर दो-दो शिकार, इथोपिया हो, या मयांमार
इन्हें वो करते अन्दर अपने ज़बड़े के अन्दर
लाल मुंहवाले बन्दर बूश और टोनी ब्लेयर दमादम मस्त कलन्दर...

सिलीकॉन वैली में बैठा हैं बैरी
एसी के भीतर घूमती माला कंठी
संस्कृती खुनी पाश्वीक वृत्ती, लानी हैं उनको मनुस्मृती
भारत हो या संसार एक म्यान की दो तलवार, बूश ब्लेयर और संघ परिवार
जाग ए शेरे बब्बर, जुल्म से लेले टक्कर
जीत ले इनसे लड़कर, दमादम मस्त कलन्दर...
भूमि समन्दर....

अपुन था इधर का भाई

अपुन था इधर का भाई धंदा लोगों की कलाई
पण काय सांगू ताई आता टांग टुटी आई । अपुन था इधर का भाई.....

साल में तीन बार अपना सीजन जब आता था
बाबा के गानों को डिस्को साऊंड पे बजाता था
जलसा तीन दिन का भाई, खाया पिया मौज मनाई
पण काय सांगू ताई आता टांग टुटी आई । अपुन था इधर का भाई.....

रैली में जय भीम का नारा शेर सा गुर्राता था
गल्ली में करफ्यू लगता जब टाईट होके आता था
सर पे भीम की पुण्याई चंदा थी मेरी कमाई
खाता चिकन मच्छी फ्राई आता काय सांगू ताई । अपुन था इधर का भाई.....

शेयर मार्केट में जैसे शेयर उछलता हैं
टॅलेन्ट मेरा यारों वैसे चमकता हैं
बात साहब तक गयी, चिठ्ठी लेके गाड़ी आयी
बना रुपये का सिपाही, आता काय सांगू ताई । अपुन था इधर का भाई.....

(कव्वाली चाल)
रिटायरों की वो गादी, निठल्लों का नाका
लगा के नीला झंडा उसपे नाम अपना ठोका
बैनर लगाया मैंने झंडे लगाया मैने
अपने कौम की जवानी रस्ते लगाया मैने
पत्रक निकाला मैने मैगजीन छापई मैने
गोदामी दिमागो में उंदीर घूसाए मैने

वो सदियों की लड़ाई बाबा की अगुवाई
लगा के सबको स्याही खुद की लामी बनाई
केबल चलाया मैने लेबल लगाया मैने
ऊंचे लोगों के हॉल में खुद को बिठाया मैने
पंडों की सोहबत में मंदीर की सियासत में
बुद्ध को किया रुसवा पत्थर की उल्फतों में
खुदगर्जी मेरी चाहत मौका परस्ती फितरत
समाजसेवा भाई दौलत और शोहरत

बिल्ली के भाग जागे सिक्का टूटा दहीं का
टिकीट पे में झपका चुनाव बी.एम.सी. का
सेठों से मांगा चंदा बिल्डर से खाया हफ़्ता
स्मगलरों के पोट्टे थे मेरे कार्यकर्ता
झोपडे जलाये मैने झोपडे बसाये मैने
बाबा का फोटो लेकर वोटर पटाये मैने

(चाल बदली)
बात सत्ता की जब आयी जात मेरे आड आयी
साहब ने जात दिखाई आता काय सांगू ताई । अपुन था इधर का भाई.....

डायनामिक हम भीम के बेटें भीम जैसा हो सपना
दानों के मोहताज नहीं हमें उंचा अभी हैं उड़ना
थवा बनके उडो भाई आकाश में बदली छाई
आँखे बैरी ने झपकाई अजून काय सांगू ताई । अपुन था इधर का भाई.....

दोगलापन और बेवफाई राजनीती की ये कलाई
जाती का बन्धन तोंड़ो फिर हमसे दिल जोडो
मिटे विषमता की खाई छाए समता की हरियाली
करे देश की भलाई अजून काय सांगू ताई । अपुन था इधर का भाई.....

झींगी नांग चीकी नांग

चल झींगी नांग चीकी नांग झींगी नांग चीकी नांग
झींगी नांग चीकी नांग झींगी नांग

जहां नहीं वहां लोग फंसाते टांग – २
बाबू झींगी नांग चीकी नांग....

गांडू भडवे रंग चढ़ रहें मर्दो का बुरा हाल
पेट की खातीर तन को बेचे कहलाती वों छिनाल !
धरम करम की चर्चा चलती खाके रबड़ी भांग
बाबू झींगी नांग चीकी नांग....

मार्केट बन गई दुनिया सारी आयटम बन गई नारी
तेजस्वी भारत का सपना देखें अटल बिहारी बाबू झींगी नांग चीकी नांग....

झंडे लेकर पंडे दौडे राम का नाम उछालें
अल्लाहवाले बोल रहें हैं नारे तकब़ी रिसाले
देश खडा हैं चौराहे पे होके भुखा नंगा बाबू झींगी नांग चीकी नांग....

अम्मा पूजो बाबा पूजो आत्मा में झाकों
घर में बच्चें बोंब मारे बाबा रोटी दे दो बाबू झींगी नांग चीकी नांग....

राजाची राणी झालीस लक्ष्मीसारखी वाग
नाहीतर कानाखाली वाजवीन म्हणतो तशी ठाक बाई झींगी नांग चीकी नांग....

कपाळाचा टिळा होऊ मी घालू मंगळसूत्र
इकडे तिकडे तोंड मारतोस तू नाय पत्नीव्रत बाई झींगी नांग चीकी नांग....

याला पटलं त्याला पटलं फील गुड पटलं
पटलं पटलं म्हणून याचं खटलं असं उठलं बाबू झींगी नांग चीकी नांग....

तोंड पाहून विडा देता गांड पाहून पीडा
कसा तुमचा बामन धर्म माणूस झाला कीडा बाबू झींगी नांग चीकी नांग....

जहां नही वहां लोग फसाते टांग – २ बाबू झींगी नांग चीकी नांग....

मुंबईचा मुलगा

मुंबईचा मुलगा पहा खातों हा गुटखा मावा
लडकी को आयटम बोलतो कसला मराठा छावा

घरात नाहीं भात याचा थाट मोठा भारी
दुबईला येते जाते याची डेली सवारी
उसने याचे कपडे अन् उसने याची गाडी
सचिनचा रेकॉर्ड ठेवतो स्वत:चा नाही काही ठेवा
मुंबईचा मुलगा पहा....

सायबरचा कल्चर बावा स्कॉलर मोठा टॉपं
बरगरच्या प्लेटमधे जसा रामपूरी चाकू
भेज्याची गुलामी आपली इंग्लिशने झाकू
कॉम्पलॅनच्या अंगात कसलं घाम निघेल बाबा
मुंबईचा मुलगा पहा....

रईसाचं पोरगं पहा लंडनची काय जवानी
गरीबाचं पोरगं भरतं बी.एम.सी शाळेचं पानी
मोबाईलची औलाद करी शिक्षणाची निलामी
हारवर्डची डिग्री वाला करतो गरीबीचा दावा
मुंबईचा मुलगा पहा....

हिन्दुत्वाचा हा रक्षक शिवशाहीचा पुजारी
मांडवली याचं शौर्य अन् हफ़्ता बहादूरी
मुखात राम नाम अन् खिशात कटियारी
रिमोटचा खिलौना जगाचा काय घेईल ताबा
मुंबईचा मुलगा पहा....

ज़िहाद गरीबीशी सबसे बडी लडाई
पोराचं भवितव्य ओळख रे रहीम भाई
हर खास आम मुसलमान में फरक हैं भाई
फुरसत नहीं हैं पेट से जाये कहां से काबा
मुंबईचा मुलगा पहा....

संघर्षाची ही नगरी मातीत हीच्या लाव्हा
झाले किती धुरंदर सावित्री संग जोतिबा
विझली दिव्याची कांडी पेटव रे पुन्हा वणवा
जो शुद्रासाठी झटतो खरा मराठा छावा
जो गरीबासाठी भांडतो खरा मराठा छावा
लढणारा मुलगा पहा बाबा रे बंधुभावा
पेटणारा मुलगा पहा बाबा रे बंधुभावा
मी झाली त्याची छावी तो झाला माझा छावा ...

मलमल में लिपटी कटार

मलमल में लिपटी कटार रे यहां ऐसें छिपे गद्दार
ंहोशियार..

पहला किस्सा रावण का सून महापंडीत बलवान
घोर तपस्वी दृढनिश्चयी रक्त में स्वाभीमान
घर का भेदी लंका ढाएं – २
विभिषण था गुन्हेगार
रे यहां ऐसे छिपे गद्दार....होशियार...

अंग्रेज आए बनके व्यापारी मुजरा करें सौ बार
बंगला सुबे पे पहला कब्जा फिर हिन्द पे सरकार
सेठ अमीचंदने लड़ने दिये थे - २
सूद में थैली उधार
रे यहां ऐसे छिपे गद्दार....होशियार...

रेल के पहिये जाम हुए थे आम हुई हड़ताल
हक के लुटेरों अंधे कुबेरो जॉर्ज की थी ललकार
मज़दूरों का वो मसीहा मुफलीसों का वो लडवईया – २
सत्ता से अब करे प्यार रे यहां ऐसे छिपे गद्दार....होशियार...

मनुवाद के कहर से उपजी बुझते दिये की ज्योती
बाबा तेरा मिशन अधूरा पुरा करे दलित बेटी
सत्ता की माया बदले काया – २
बदलें जुबां हर बार
रे यहां ऐसे छिपे गद्दार....होशियार....

कोलकाता के कॉमरेड आलें झंडे लाल हैं खून काले
दिल्ली में बैठ के रोके अमरीका बंगाल बेचे सारा
भद्र गुणी जन सौम्य कुलीन – २
चेहरे पे गरीबी उधार
रे यहां ऐसे छिपे गद्दार....होशियार...

दिशाभूल करें नौजवां की आंदोलन करे बरबाद
असंतोष को सहलाने को समाजसेवा साथ मेवा
टुकड़े बांटे संघर्ष रोके – २
व्हाऊचर करे लाचार
रे यहां ऐसे छिपे गद्दार....होशियार...

धर्मांदो सेठो के जुल्म से जनता हुई बेजार
विषमता में तपती ये जवानी बनने चली तलवार
परिवर्तन की ये हैं लड़ाई उसने ली हैं फिर अंगड़ाई – २
उसपर कौन कर रहा बलात्कार
रे यहां ऐसे छिपे गद्दार....होशियार...

……..

समाप्त